This question paper contains 3 printed pages.]

7760 *आपका अनुक्रमांक* .....

M.A. (एम.ए.) / II **A**

HINDI (हिन्दी)

Group B – Reetikaleen Kavya

वर्ग (ख) – (रीतिकालीन काव्य)

Paper 15–Reetimukta Kavya Dhara : Reetimukta Kavya

प्रश्न पत्र 15 – रीतिमुक्त काव्यधारा : रीतिमुक्त काव्य

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 50*

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : *प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक एम.ए. हिन्दी परीक्षा के वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फॉर्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य है। वर्ग 'अ' (नियमित पूर्व विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।*

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अतिदीन मृनाल के तारहु तें तिहि
ऊपर पाँव दै आवनो है।

सुई बेह तें द्वार सकीन तहाँ परतीति को
टाँडो लदावनो है।
कवि बोधा अनी घनी नेजहू ते चढ़ि
तापै न चित्त डगावनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल है जू तरवार की
धार पै धावनो है।

अथवा 7

चारों दस भौन जाके खा एक रेनु कौ सौ,
सोई आज रेनु लावै नंद के अवास की।
आलम सुकवि जाके त्रास तिहुँ लोक त्रसै,
तिन जिय त्रास मानी जसुदा के त्रास की।
इनके चरित चेति कहति हैं नेति नेति,
जानी न परत कहू गति अबिनास की॥

(ख) मोतिन कैसी मनोहर माल गुहै तुक
अक्षर जोरि बनावै।
प्रेम को पंथ कथा हरिनाम की बात
अनूठी बनाई सुनावै।
ठाकुर सो कबि भावत माहिं जो राजसभा
में बड़प्पन पावै।
पंडित लोक प्रबीनन को जोइ चित्त
हरै सो कबित्त कहावै॥

अथवा 7

नागर से हैं खरे तरु कोउ, लिए कर-
पल्लव में फल-फूलन,
पाँवड़े साजि रहे हैं कोऊ, कोउ बीथिन बीच
पराग-दुकूलन।
फूल झरैं द्विजदेव कोऊ, पुर कानन
माँहि कलिंदजा कूलन,
आगम मैं ऋतुराज के आजु, सबै विधि
खोए सबै निज सूलन।

2. आलम की शृंगार भावना का निरूपण कीजिए।

अथवा 12

आलम की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।

3. द्विजदेव के काव्य की अन्तर्वस्तु पर विचार कीजिए।

अथवा 12

द्विजदेव के अप्रस्तुत विधान पर प्रकाश डालिए।

4. ठाकुर के काव्य में व्यक्त लोक संस्कृति के विभिन्न रूपों का उद्घाटन कीजिए।

अथवा 12

"बोधा भावुक और रसज्ञ कवि है" – सोदाहरण विवेचन कीजिए।